डॉ·व्यंकटेश वामन कोटबागे
एम·ए·पीएच्·डी·
रीडव एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
किसन वीर महाविद्यालय, वाई,
जि·सातारा· (महाराष्ट्र)

प्रमाणपत्र

मैं डॉ·व्यंकटेश वामन कोटबागे, यह प्रमाणित करता हूँ कि, श्री·मिलींद महादेव साळी ने शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम·फिल् (हिन्दी) उपाधि के लिए प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध निराला की 'अपरा' में राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक चेतना" मेरे निर्देशन में सफलतापूर्वक किया हैं। इसमें प्रस्तुत तथ्य मेरे जानकारी के अनुसार सही हैं। मैं श्री·मिलींद महादेव साळी के प्रस्तुत शोध-कार्य के बारे में पूरी तरह सन्तुष्ट हूँ।

V.V. Kotbage

हस्ताक्षर

डॉ·व्यंकटेश वामन कोटबागे
निर्देशक

वाई
दिनांक - 29/4/97

अनुशंसा

हम अनुशंसा करते हैं कि श्री॰मिलींद महादेव साळी का एम॰फिल॰ (हिन्दी) का लघु-शोध-प्रबंध "निराला की 'अपरा' में राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक चेतना" परीक्षणार्थ प्रस्तुत किया जाए।

हिन्दी विभागाध्यक्ष,
लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय
सातारा (महाराष्ट्र)

प्राचार्य
लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय
सातारा (महाराष्ट्र)

प्रस्थापन

मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि मेरे संशोधन का विषय "निराला की 'अपरा' में राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक चेतना" सर्वथा मौलिक है। इसके प्रस्तुतिकरण के पहले इस या अन्य महाविद्यालय में किसी उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं किया गया है।

श्री·मिलींद महादेव साळी
मु·पो·रामानंदनगर
ता·तासगांव जि·सांगली
पिन 416 308

रामानंदनगर
दिनांक -29/4/97

भूमिका

निरालाजी के जीवन पर और उनके काव्य पर अनेक पुस्तकें प्रकाशित हुई है। निरालाजी जैसे महान कवि का कोई भी अध्ययन करना चाहता होगा क्योंकि निरालाजी ने अपने जीवन में घटित घटनाओं का ही वर्णन अपनी अनेक कविताओं में किया हैं। निरालाजी की "तोडती पत्थर" कविता से मैं महाविद्यालय के जीवन से प्रभावित था। इसीलिए जब मौका मिला तो निराला की 'अपरा' का अध्ययन करने के मौके का लाभ उठाया और इस विषय को निर्धारित किया। इस पुस्तक को चयन करनेका महत्वपूर्ण कारण है कि निरालाजी की साहित्य की सारी प्रतिभा इस पुस्तक में देखी जा सकती है।

स्वयं कवि ने ही अपनी महत्वपूर्ण रचनाओं का इसमें संग्रह किया है। इस पुस्तक का गहराई से अध्ययन करना महत्वपूर्ण बात थी। इन रचनाओं का अनेक पहलुओं से अध्ययन किया जा सकता है पर सीमा निर्धारित करने के हेतू राष्ट्रीय चेतना और सांस्कृतिक चेतना को चुन लिया। इसमें निरालाजी की राष्ट्रप्रेम की चेतना तथा संस्कृति के प्रति आदर की चेतना देखने मिलती है।

इस पुस्तक के लेखन की प्रेरणा श्री·डॉ·गजानन सुर्वेजी से प्राप्त हुई। आपकी प्रेरणा हमेशा ही सबल मार्गदर्शक रही है। मैं· डॉ·सुर्वेजी के सहयोग से हृदय से आभारी हूँ। मैं एल·बी·एस· महाविद्यालय, सातारा का भी हृदय से आभारी हूँ जिससे मैं यह कार्य सफल कर पाया हूँ। डॉ·शिवाजी निकम, प्रा·विलास पवार, प्रा·जयवन्त जाधव, प्रा·पी·एन·आवटे, श्री·वाय·एस·पाटील, श्री·व्ही·बी·कासार, श्री·एस·एस·आंबीजी के स्नेह और सहयोग से मैं सदा ही लाभान्वित हुआ हूँ।

मेरे माता-पिता और भाईयों का तो मैं सदा ही ऋणी हूँ।

इस प्रबंध के निर्देशक और मेरे मार्गदर्शक डॉ·व्यंकटेश वामन कोटबागेजी के प्रति भी मैं हमेशा ऋणी हूँ।

एल·बी·एस·महाविद्यालय, सी·एस·महाविद्यालय, सातारा, ए·एस·सी· महाविद्यालय, रामानंदनगर, पुस्तकालय से सामग्री प्राप्त हुई है। इन संस्थाओं के प्रमुखों के प्रति श्रध्दा और प्रणाम ।

मैंने जिन महान मनिषियों के ग्रंथों का लाभ उठाया है उनके प्रति भी कृतज्ञ हूँ।

यह प्रबंध टंकलिखित करने वाले "रिलॅक्स सायक्लोस्टायलिंग" सातारा के श्री·मुकुन्द ढवळेजी तथा उनके सहयोगी श्री·बाळकृष्ण कुलकर्णी और सुशिलकुमार कांबलेजी भी धन्यवाद के अधिकारी हैं।

मिलींद महादेव साळी

दिनांक - 29/4/97

ठिकाण - सातारा